P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-I*September-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

महात्मा गाँधीः एक संक्षिप्त परिचय

रवीन्द्र कुमार
अध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
सेण्ट ऐण्ड्रयज कालेज,
गोरखपुर ,उ0प्र0

सारांश

महात्मा गाँधी का पूरा नाम मोहन दास करमचंद गाँधी था जिनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 ई0 को गुजरात के काठियावाड़ राज्य के अधीन पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। पिता करमचंद गाँधी व माता पुतलीबाई थी। इनका पैतृक व्यवसाय अनाज का था। पुतलीबाई चौथी पत्नी थी। माँ धार्मिक प्रवृति की थी और वैष्णव धर्म के मानने वाले थे जिन्होंने गाँधी जी को बचपन से ही सत्य व अहिंसा की शिक्षा दी थी। माँ के काफी नजदीक होने के कारण उनके व्यक्तित्व पर उनका गहरा प्रभाव पड़ा।

मुख्य शब्द : महात्मा गाँधी, ब्रिटिश शासन, दक्षिणी अफ्रीका, गाँधी – युग , सत्याग्रह।

प्रस्तावना

महात्मा गाँधी का जन्म ऐसे समय हुआ था जब भारत पर ब्रिटिश शासन मजबूती से स्थापित हो चुका था। 1857 का महान विद्रोह हो चुका था और इसके उपरांत ब्रिटिश सरकार ने अपनी साम्राज्यवादी व आर्थिक नीतियों को और भी कुशलता के साथ लागू किया। 13 वर्ष की अवस्था में उनका विवाह हो गया और 1887 ई0 को मैट्रिक परीक्षा पास की। 1887 से 1891 तक इग्लैण्ड़ में रहकर वैरिस्टरी/वकालत की शिक्षा ली और जुलाई 1891 में स्वदेश आकर राजकोट एवं बम्बई में वकालत शुरू की और इसी क्रम में वे दक्षिणी अफ्रीका गये। नेटाल में पांव रखते ही उन्हें बहुत ही कड़वे अनुभवों का सामना करना पडा। रंगभेद की नीति के कारण कार्यरत अंग्रेजी सरकार ने उन्हें कई बार अपमानित किया उन्हें होटल से गर्दन पकड़कर निकाल बाहर किया, ट्रेन से धक्का देकर निकाल बाहर किया। उन्हें गोरें लोगों ने लात–घूसों से मारकर हटाया। दक्षिणी अफ्रीका प्रवास के दौरान घटी इन घटनाओं ने उनके ऊपर क्रांतिकारी प्रभाव ड़ाला और उन्होंने यह निश्चय किया कि दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों के आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करेंगे और इसके लिए 22 मई 1894 को नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की।

महात्मा गाँधी ने दक्षिणी अफ्रीका से एशियावासियों (Asian) का निष्कासन जो रंगभेद पर आधरित था, का विरोध करते हुए अदालत का दरवाजा खटखटाया और अपनी दलीलों के द्वारा एशियावासियों के लिए अधिकार प्राप्त कियें किन्तु यह जीत सिर्फ कानूनी ही थी उसे व्यवहार स्वरूप नहीं लाया जा सका। गाँधी ने हस्ताक्षर अभियान चलाकर और इंडियन ओपिनियन (Indian Opinion) नामक पत्र द्वारा अपनी बात को नेटाल और लंदन तक पहुँचाया। 1908 से 1914 के बीच हजारों अप्रवासी भारतीयों ने गाँधी के नेतृत्व में दक्षिणी अफ्रीका के गोरे शासन के विरूद्ध सत्याग्रह किया। इस वृहद स्तर पर किये गये सत्याग्रह के परिणामस्वरूप गोरी सरकार को बाध्य होकर कुछ अमानवीय कानून को वापस लेना पड़ा। यह गाँधी जी के सत्याग्रह की विजय थी । अब भारतीय लोग स्वतंत्रतापूर्वक नेटाल में रहते हुए अपनी इच्छानुसार कार्य कर सकते थे।

जनवरी 1915 ई0 में महात्मा गाँधी भारत लौटे और अपने राजनीतिक गुरू गोपाल कृष्ण गोखलें की सलाह पर चुपचाप भारतीय राजनीतिक स्थिति का अवलोकन किया और 1916ई0 तक सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया और विद्यमान राजनीतिक–सामाजिक बुराइयों से रूबरू हुए। 1916 ई0 के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया। 1917 से 1918 के बीच तीन महत्वपूर्ण आंदोलनों का प्रारम्भ चम्पारण,खेड़ा और अहमदाबाद आंदोलन को प्रारम्भ किया जिनमें उन्हें सफलता प्राप्त हुई। 1915 से 1919 तक वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की भाँति ब्रिटिश सरकार की नीतियों में विश्वास करते हुए सहयोग का भाव रखा। किंतु रौलेक्ट ऐक्ट और अमृतसर की जलियांवाला बाग की घटना होने के उपरांत, सम्पूर्ण पंजाब प्रांत में मार्शल लॉ लगने के बाद और घटना की जांच हेतू गठित सरकारी हंटर समिति (Hunter -committee) व उसकी रिपोर्ट, खिलाफत के प्रश्न आदि ने उन्हें झकझोर दिया और उनके राजनीतिक

जीवन में परिवर्तन आया और वे सरकार विरोधी हो गये और उन्होंने ब्रिटिश शासन को शैतानी शासन कहकर उसके साथ असहयोग का कार्यक्रम बनाया। गाँधीजी ने अगस्त 1920 से लेकर फरवरी 1922 तक अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन चलाया किन्तु उ0प्र0 के चौरी–चौरा में जनता के हिंसक हो जाने पर उन्होंने आंदोलन को वापस ले लिया और ब्रिटिश सरकार ने कैद कर जेल में डाल दिया जहां कुछ अर्से के बाद उनके खराब स्वास्थ्य के कारण रिहा कर दिया गया। रिहा होने के बाद उन्होंने हिन्दु–मुस्लिम एकता की स्थापना के लिए, भरतीयों को स्वालम्बन देने के लिए चरखा–खादी, दलितों द्वार, मद्य–निषेध जैसे सामाजिक बुराईयों को दूर करने के कार्यो में लगाया। इसी बीच संवैधानिक सुधारों पर बातचीत के लिए साइमन कमीशन का आगमन भारत में हुआ जिसमें कोई भी सदस्य भारतीय नही होने के कारण भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने गाँधी जी के नेतृत्व में विरोध करने का निर्णय लिया। साइमन आयोग वापस जाओं (Simon Commission Go Back) का नारा दिया गया और जहां – जहां यह आयोग गया वहाँ– वहाँ उसे विरोध सहना पड़ा और काले झण्डे दिखाये गये। ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई चुनौती के आधार पर नेहरू रिपोर्ट और 1929 में लाहौर अधिवेशन में रावी नदी तट पर जवाहर लाल नेहरू के द्वारा पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा की जिसकी प्राप्ति के लिए महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने का निर्णय लिया और इसके लिए दांडी जाकर नमक बनाकर नमक कानून को तोड़ने का निश्चय किया। इस नमक सत्याग्रह के दौरान हजारों कार्यकर्त्ताओं ने गाँधी जी के साथ भाग लिया और उनके साथ गिरफ्तारी दी।

गाँधी –इरविन समझौते के परिणाम स्वरूप वे दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने लंदन गये किन्तु अल्पसंख्यकों से सम्बन्धित कोई नतीजा न निकालने पर वे निराश हो भारत आ गये और उन्हें पुनः सरकार ने उन्हें जेल में डाल दिया और दमनचक्र को जारी रखा। तीसरे गोलमेज सम्मेलन में साम्प्रदायिक पंचाट के द्वारा मुसलमानों के साथ – साथ दलितों को भी हिन्दुओं से अलग कर दिया जिसके परिणामस्वरूप गांधीजी ने आमरण अनशन किया और अंततः उनके प्रयास से गाँधी जी और डा0 अम्बेड़कर के बीच 24 सितम्बर 1932 को पूना– समझौता हुआ। 1937 के आम चुनाव में कांग्रेस ने शानदार विजय प्राप्त की। 1939 में महात्मा गाँधी और सुभाष चन्द्र बोस के वैचारिक मतभेद होने के कारण बोस ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को छोड़ दिया।

दूसरे विश्वयुद्ध में वायसराय ने बिना जनप्रतिनिधियों के परामर्श के बगैर भारत को युद्ध में शामिल कर लिया जिसके विरोध में भारतीयों ने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। सरकार ने जनता की वाक् स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया। इसलिए गाँधी ने 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया। 1942 के वर्ष में जापान द्वारा वर्मा की विजय प्राप्त कर लेने के बाद जापान का खतरा भारत पर देखकर भारतीय समस्याओं का समाधान के लिए ब्रिटिश सरकार ने क्रिप्स मिशन को भेजा किन्तु उसके प्रस्तावों को अस्वीकार करते हुए गाँधी ने भारत छोड़ो आंदोलन शुरू करनें का निर्णय लिया। सभी कार्यकत्ताओं को गाँधी समेत अगस्त 1942 में गिरफ्तार कर जेल में ड़ाल दिया गया। इस आंदोलन को बुरी तरह से दबा दिया गया। 1944 के वर्ष में गाँधीजी बाहर बायें और संवैधानिक व साम्प्रदायिक समस्या पर विचार करने हेतु जिन्ना से वार्ता हुई जो कि असफल रही। ब्रिटिश सरकार ने समस्या का हल निकालने के लिए कैबिनेट मिशन को भेजा जिसके प्रस्तावों को मुस्लिम लीग ने माननें से इन्कार कर दिया। जिन्ना ने पाकिस्तान के मांग के संदर्भ में सीधी कारवाई की घोषणाकर दी जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण देश में साम्प्रदायिक दंगे भड़क गये और लोग भारी संख्या में मारे– काटे गये। गांधी ने बड़ी कठिनाई से कलकत्ता और नोआखली में शांति स्थापित करवायी और हिन्दू–मुस्लिम एकता का प्रचार किया। परिस्थितियों के वंशीभूत होकर उन्होंने विभाजन को स्वीकार किया। 15 अगस्त 1947 के साल में भारत का विभाजन हो गया।

1920 से 1948 तक के काल को गाँधी – युग कहलाता है जिसमें उन्होंने 1920–22 में असहयोग आंदोलन, 1930–31 और 1932–34 में सविनय अवज्ञा आंदोलन, 1940–41 में व्यक्तिगत सत्याग्रह व 1942 ई0 में भारत छोड़ो आंदोलन था जो उनके सत्य व अहिंसा पर आधरित था। इन अहिंसक आंदोलन के कारण ही गाँधी जी द्वारा शुरू किया गया आंदोलन जन आंदोलन का रूप ले सका और लोगों ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। गाँधीजी के प्रत्येक कार्य में लोगों ने सहयोग किया,उनके प्रत्येक निर्णय–आह्वान का समर्थन किया। इस जन–आंदोलन पर ब्रिटिश सरकार अपनी सेना का प्रयोग नहीं कर पायी।

उद्देश्य

1920 से 1948 तक के काल को गाँधी युग कहा जाता है।जिसमें उन्होने 1920–1922 में असहयोग आन्दोलन, 1932–1934 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन, 1940–1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन था जो उनके सत्य और अहिंसा पर आधारित था। इन अहिंसक आन्दोलनों के कारण ही गाँधी जी के द्वारा शुरू किया गया आन्दोलन जन आन्दोलन का रूप ले सका।

निष्कर्ष

30 जनवरी 1948 ई0 को दिल्ली में प्रार्थना सभा जाते वक्त नाथूराम गोंड़से ने गाँधी जी को गोली मारकर हत्या कर दी। गाँधी जी वास्तव में न केवल भारत अपितु सारें संसार की महान आत्माओं में से एक थे जिनकी तुलना महात्मा बुद्ध और प्रभु ईसामसीह से की जा सकती है क्योंकि अहिंसा का उपदेश व प्रयोग इन महान व्यक्तियों ने किया था। गाँधी जी एक विराट व्यक्तिव मात्र नहीं अपितु एक ऐसी विचारधारा है जिसमें दुनिया की तमाम उलझी समस्याओं को दिशा प्रदान करने की अद्भूत शक्ति है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. ताराचंद, प्रो0, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास भाग–4, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार , नई दिल्ली।
2. फिशर, लुई , गाँधी की कहानी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली ,2009।

3. गाँधी, मोहनदास करमचंद, दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली , 2009।
4. नंदा, बल राम, गाँधी सचित्र जीवन गाथा, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली।